B.A I (Hons)

I Paper भारतीय दर्शन — 29.7.20

वैशेषिक - पदार्थ

(3). कर्म पदार्थ

द्रव्य के मूल भूत गतिशील पक्षों को कर्म कहते हैं। गुण जहाँ द्रव्य का निष्क्रिय स्वरूप है, वहीं कर्म सक्रिय रूप। कर्म द्रव्य में गुण हीन होता है, क्योंकि गुण द्रव्य पर ही आश्रित है। वैशेषिक के अनुसार, पदार्थों के गति का नाम कर्म है। कणाद का मानना है कि जो द्रव्य में आश्रित रहता है, गुण से पृथक होता है। कर्म द्रव्याश्रित है। कर्म का निवास पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और मन है। कर्म के द्वारा एक द्रव्य को दूसरे द्रव्यों से संयोग होता है। कर्म को इसलिए संयोग और विभाग का कारण माना जाता है।

कर्म की विशेषता — (1) कर्म क्षणिक होता है। वैशेषिक दर्शन में कर्म को पांच क्षण तक जीवित मानता है (2) कर्म की उत्पत्ति सभी द्रव्यों में नहीं होती है। आकाश, काल, आत्मा, मन कर्म से रहित है। यह सभी द्रव्य गतिहीन है इनमें कर्म का अभाव है। कर्म की तीसरी विशेषता है कि कर्म से निश्चित द्रव्यों का निर्माण होता है (4) कर्म गुण से पृथक है। यह निर्गुण है।

वैशेषिक दर्शन कर्म के पाँच प्रकार मानता है (1) उत्क्षेपण — उत्क्षेपण उस कर्म को कहते हैं जिसके द्वारा वस्तु का संयोग

रूप में देखा है।
सामान्य के अनुसार अनेक जाति के इसको आ
किसी वर्ग के सभी व्यक्तियों में अनुगत रहता
समवाय सम्बन्ध से विद्यमान रहता है। इसी प्र
में अनुगत रहनेवाला अनुगत सामान्य है
उसे जाति भी कहा जाता है।

सामान्य को लेकर भारतीय विचार
में तीन मत पाये जाते हैं।

(1) नामवाद — इस मत के अनुसार व्यक्ति से पृथक सामान्य की सत्ता नहीं है। सामान्य एक प्रकार का नाम है। इस मत के विचारकों का मानना है कि 'गोत्व' जो सभी गायों का सामान्य एवं आवश्यक गुण है मात्र नाम है वह अन्य जानवरों जैसे घोड़ा, हाथी से भिन्न है। बौद्ध दर्शन इस मत के समर्थक हैं।

(2) प्रत्ययवाद — इस मत के अनुसार सामान्य प्रत्यय मात्र है। प्रत्यय की स्थापना व्यक्तियों के सर्वनिष्ठ आवश्यक धर्मों के आधार पर होती है। इस मत के मानने वालों में जैन दार्शनिक व वेदान्त के समर्थक हैं।

(3) वस्तुवाद मत सामान्य की तीसरी विवेचना है। इनके अनुसार सामान्य की वस्तु सत्ता है। न्याय वैशेषिक में सामान्य को इस प्रकार व्यक्त किया गया है — "नित्यमेकमनेकानुगतं सामान्यम्" अर्थात सामान्य नित्य एक और अनेक वस्तुओं में समाविष्ट है पूरे वर्ग के सभी व्यक्तियों में एक ही सामान्य होता है

वैशेषिक के अनुसार सामान्य के तीन भेद होते हैं — (1) पर (2) अपर (3) परापर

(i) पर — यह सामान्य [illegible] सामान्य से अधिकतम [illegible] को कहा जाता है।

(ii) अपर — अल्प स्थान पर रहने वाला सामान्य अपर सामान्य कहलाता है जैसे [illegible]

(iii) परापर — दोनों के बीच के सामान्य को परापर सामान्य कहा जाता है। इसका उदाहरण द्रव्यत्व है। यह सामान्य पर के अपेक्षा अपर तथा अपर के अपेक्षा पर है।

बौद्ध दर्शन सामान्य के सत्ता को स्वीकार नहीं करते हैं। बौद्ध के अनुसार व्यक्ति के कारण जाति का अस्तित्व नहीं माना जा सकता है क्योंकि जाति व्यक्ति के पूर्व नहीं थी और न ही बाद में रहती है और न व्यक्ति के साथ उत्पन्न होती है। इस प्रकार बौद्ध केवल स्वलक्षण को ही सत्य मानता है।